Autocratic Teaching Strategies :—

(i) Lecture Strategy :—
[व्याख्यान व्यूह रचना]

Introduction [भूमिका] :— यह शिक्षण की अति प्राचीन विधि मानी जाती है। यह आदर्श विचारों की देन है तथा इस व्यूह रचना का विश्वविद्यालयों एवं उच्च कक्षाओं में विशेष महत्व है।

"व्याख्यान उन तथ्यों सिद्धांतों तथा सम्बन्धों का स्पष्टीकरण है, जिनको शिक्षक चाहता है कि उसको सुनने वाले उसको समझें।" — Thomas Ma Risk.

Structure :— इस नीति के अन्तर्गत शिक्षक छात्रों के सम्मुख किसी विषय पर भाषण देता है, जिसे छात्र ध्यान से सुनते जाते हैं तथा कभी-कभी बीच में अध्यापक से प्रश्न भी पूछे जाते हैं। अतः इस व्यूह रचना में पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है।

Merit :— 1. यह नीति शिक्षक के लिए सरल तथा सुविधाजनक है।
2. यह विधि कम खर्चीली विधि है।
3. कम समय में अधिक से अधिक विषय वस्तु का शिक्षण किया जा सकता है।
4. विद्यार्थियों में भाषण सुनने की आदत का विकास किया जाता है।
5. इस विधि का प्रयोग अन्य विधियों की सहायक विधि के रूप में भी किया जाता है।

Demerit :— 1. छात्र निष्क्रिय रहता है।
2. शिक्षक का कक्षा पर एकाधिकार होता है।
3. यह एक अमनोवैज्ञानिक विधि है, जिसमें छात्रों के ज्ञान

ग्रहण करने की तत्परता पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता।

4. इस विधि के माध्यम से हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास नहीं किया जा सकता।

5. इस विधि का प्रयोग केवल उच्च कक्षाओं में ही किया जा सकता है।

सुझाव :- 1. व्याख्यान सरल, बोध तथा प्रवाहमय भाषा में प्रस्तुत किया जाये।

2. व्याख्यान देने की गति अधिक तीव्र नहीं होनी चाहिए

3. शिक्षक को व्याख्यान देते समय विषय वस्तु से बाहर नहीं जाना चाहिए।

(ii) **Demonstration Strategy :-**
[प्रदर्शन व्यूह रचना]

Introduction:- यह व्यूह रचना प्रशिक्षण की परम्परागत विधि है, इसका विशेष रूप से प्रयोग तकनीकी स्कूलों तथा औद्योगिक प्रशिक्षण आदि में किया जाता है। इस विधि का प्रयोग करते समय शिक्षक का प्रमुख रहता है। क्योंकि शिक्षक जिस रूप में पाठ का प्रदर्शन करता है ठीक उनका अनुसरण करते जाते है।

Structure :- पाठ-प्रदर्शन विधि में तीन सोपानों का अनुसरण किया जाता है।

(a) **Introduction:-** सर्वप्रथम विषय वस्तु की प्रस्तावना की जाती है।

(b) **विकास :-** इसमें पाठ्यवस्तु का विधिवत शिक्षण बिन्दुओं के आधार पर विकास किया जाता है।

(c) **एकीकरण :-** इसमें सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु का एकीकरण किया जाता है।

A Quality Product from Chitra

Merits:- 1. पाठ्यवस्तु को सरल एवं बोधगम्य बनाया जा सकता है।
2. यह एक प्रभावशाली व्यूह रचना है।
3. दृश्य एवं श्रव्य इंद्रियों की क्रियाशीलता के द्वारा पाठ्यवस्तु को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।
4. विज्ञान तथा अन्य तकनीकी विषयों में कारण तथा प्रभाव के सम्बन्ध को स्पष्ट किया जा सकता है।
5. इस विधि का प्रयोग करके ज्ञान को स्थायी बनाया जा सकता तथा छात्रों को विषय वस्तु के प्रति प्रेरित किया जा सकता है।
6. विषय वस्तु का विकास क्रमबद्ध रूप में हो जाता है।

Demerits:-
1. इस विधि का प्रयोग सभी स्तरों पर नहीं किया जा सकता।
2. इस विधि के प्रयोग से अधिकांश छात्र निष्क्रिय रहते हैं।
3. इस विधि में व्यक्तिगत विभिन्नता के लिए कोई स्थान नहीं है।

सुझाव:- 1. विषय वस्तु के प्रदर्शन से पहले उसको क्रमबद्ध रूप में स्पष्टीकृत किया जाना चाहिए।
2. प्रदर्शन के साथ-साथ छात्रों को बीच-बीच में स्पष्टीकरण भी देना चाहिए।
3. पाठ-प्रदर्शन सम्बन्धी उपयुक्त सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।

(iii) Tutorial Strategy :—
[अनुवर्ग व्यूह रचना]

Introduction:- अनुवर्ग व्यूह रचना शिक्षण की वह व्यूह रचना है, जिसके अन्तर्गत किसी एक विद्यार्थी अथवा विद्यार्थियों के एक लघु समूह को किसी एक Tutor (अध्यापक) द्वारा व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रकार से शिक्षण प्रदान करने का प्रयत्न किया जाता है। इस व्यूह रचना

A Quality Product from Chitra